दिल्ली के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों पर लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन

अनिल कुमार तेवतिया*

मेरी बोर्ड परीक्षाएँ पास आ रही हैं। बोर्ड जीवन में महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति आपका बोर्ड स्कोर देखता है। इस साल यह महामारी क्यों आई? यह मेरे महत्वपूर्ण वर्ष को बर्बाद कर रही है। बच्चे कहते हैं, "मैं चाहता हूँ कि मेरा स्कूल किसी भी कीमत पर वापस खुल जाए।" उपलब्ध शोध साहित्य में पाया गया कि बड़े पैमाने का व्यवधान लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। कोविड-19 महामारी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर स्थायी प्रभाव डालने वाली है। यह अध्ययन दिल्ली के माध्यमिक विद्यार्थियों और शिक्षकों के जीवन पर लॉकडाउन के प्रभाव को जानने-समझने के लिए किया गया। बच्चों व शिक्षकों की राय का मूल्यांकन विभिन्न प्लेटफार्मों पर प्रश्नावली और आभासी साक्षात्कार द्वारा तथ्य संकलित कर किया गया। प्रतिक्रियाएँ लाइव कक्षाओं और टेलिफ़ोनिक साक्षात्कार से ली गईं। प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त किए गए अर्थात् इस अध्ययन में शोधार्थी ने दिल्ली के माध्यमिक विद्यार्थियों और शिक्षकों पर लॉकडाउन द्वारा होने वाले प्रभाव पर चिंतन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि बच्चे घर पर स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे हैं। उन्हें स्कूल बहुत याद आ रहा है। शोधार्थी ने पाया कि बच्चों में चिंता और तनाव के स्तर में वृद्धि हुई है (लगभग 20 प्रतिशत मध्यम से गंभीर स्तर की श्रेणी में हैं)। यह एक अच्छा संकेत नहीं है। बच्चे अकादमिक जीवन पर महामारी के संभावित नुकसान के बारे में भी सोच रहे हैं और अपने भविष्य के बारे में चिंतित हैं। इस महामारी में शिक्षक भी भयभीत हैं। वे चिंतित हैं—"क्या होगा यदि मेरे विद्यार्थी ऑनलाइन नहीं सीख रहे होंगे?" इसके अलावा, शिक्षक शिक्षा के सभी पहलुओं के बारे में अनिश्चित हैं। उन्हें लग रहा है कि वे शैक्षिक प्रणाली में सबसे कम महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। सरकारें विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए प्रयास कर रही हैं, लेकिन कोई भी शिक्षकों के स्वास्थ्य और खुशी के लिए प्रयास नहीं कर रहा है।

भारत में कोरोना वायरस-19 का प्रसार अभी भी अनियंत्रित है। संक्रमित व्यक्तियों और मृतक व्यक्तियों की संख्या के मामले अधिक हैं और लगातार बढ़ रहे हैं। यह SARS-CoV2 वायरस, जिसके परिणामस्वरूप यह बीमारी हुई है, कोरोना वायरस के परिवार में नया है। SARS-CoV2 पहले वुहान (चीन) में फैल गया और फिर विश्व के अन्य हिस्सों में बहुत तेज़ी से पहुँच गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) ने इसका मानव से मानव में संचरण स्वीकार किया है। डब्ल्यू.एच.ओ. ने कोविड -19

**प्रधानाचार्य*, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दिलशाद गार्डन, दिल्ली 110095

© NCERT not to be republished

को एक महामारी घोषित किया और सभी देशों से कहा कि वे लोगों को घर पर रहने के आदेश जारी करें।

भारत में इस रोग के पहले मामले की पुष्टि केरल में हुई थी और फिर तेज़ी से संक्रमितों की संख्या बढ़ने लगी। भारत सरकार ने संक्रमित रोगियों की संख्या को कम करने के लिए और सामाजिक सभा पर प्रतिबंध लगाने के लिए सभी उपाय किए। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 मार्च, 2020 से देश में पूर्ण तालाबंदी (लॉकडाउन) की घोषणा की। जिसके कारण पूरा देश ठप-सा हो गया। सभी गैर-ज़रूरी उद्योगों और गतिविधियों को रोक दिया गया और एक अनोखी स्थिति पैदा हो गई। चूँकि भारत सहित कई देशों में वायरस से निजात के लिए टीकों पर अनुसंधान एवं ट्रायल चल रहे हैं, इसलिए दुनिया वैज्ञानिकों की ओर बहुत आशा के साथ देख रही है।

भारत, अन्य देशों की तरह वायरस से संक्रमित लोगों की जाँच के लिए स्क्रीनिंग बढ़ाने और इसकी दैनिक परीक्षण सीमा बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। यह सामाजिक (भौतिक) दूरी और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए नए दिशानिर्देश भी जारी कर रहा है, ताकि कोरोना वायरस के प्रसार को रोका जा सके। स्कूल बंद होने के कारण बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानो गायब ही हो गया है। इस वायरस ने देश में बहुत सारे सामाजिक और आर्थिक व्यवधान पैदा किए हैं। विद्यार्थियों, माता-पिता और शिक्षकों का जीवन इस महामारी से बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। यहाँ तक कि अनलॉक शृंखला में भी बच्चों की कई आवश्यक गतिविधियाँ अभी भी प्रतिबंधित हैं।

कोविड-19 सभी के लिए एक घातक बीमारी है, खासकर वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों के लिए। इस कोविड-19 महामारी ने लोगों के बीच असहयनीय मनोवैज्ञानिक तनाव पैदा किया है (जिओ, 2020; डुआन, 2020)। वायरस के निरंतर और अनियंत्रित प्रसार तथा सख्त संगरोध उपायों के साथ-साथ राष्ट्र भर के स्कूलों को बंद रखने से बच्चों के जीवन पर नकारात्मक मानसिक और अन्य प्रभाव होने की उम्मीद है। लोगों के जीवन पर महामारी के मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, यह पाया गया है कि रोगियों, चिकित्सा कर्मचारियों, बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों, वयस्कों और समाज के अन्य सभी सदस्यों पर महामारी का प्रभाव घातक हो रहा है। वर्तमान उपलब्ध शोध साहित्य के अनुसार तथ्य दर्शाते हैं कि बड़े पैमाने पर व्यवधान सीधे लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं। पी.टी.एस.डी. यानी पोस्ट ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर सबसे ज़्यादा पाया जाने वाला डिसऑर्डर है। अन्य प्रभावों में अवसाद, भय, चिंता और अन्य व्यवहार संबंधी विकार शामिल हैं। इसलिए, कोविड-19 महामारी मनोवैज्ञानिक संकट और मनोरोग संबंधी बीमारियों को लाने के रास्ते पर है। "45 प्रतिशत अमेरिकियों ने महसूस किया कि कोरोना वायरस संकट उनके मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहा है (19 प्रतिशत ने महसूस किया कि इसका प्रभाव घातक था।)" (कैसर फ़ैमिली फाउंडेशन)। लॉकडाउन (तालाबंदी) के दौरान दिल्ली में माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों या शिक्षकों के जीवन पर इसके प्रभाव को समझने के लिए कोई अध्ययन नहीं किया गया था। इसलिए शोधार्थी दिल्ली के विद्यार्थियों और

© NCERT not to be republished

शिक्षकों के जीवन पर लॉकडाउन के प्रभाव का पता लगाने के लिए प्रेरित हुआ।

कार्यप्रणाली और प्रक्रियाएँ

दिल्ली के सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक इस अध्ययन के लिए सैंपल पॉपुलेशन थे। विभिन्न प्लेटफ़ॉर्मों से प्रश्नावली और आभासी साक्षात्कार के माध्यम से उन पर लॉकडाउन के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। प्रतिक्रियाएँ लाइव कक्षाओं और टेलिफ़ोनिक साक्षात्कार के माध्यम से एकीकृत की गईं। प्रौद्योगिकी के कम उपयोग व सीमित पहुँच के कारण समाज के निचले आर्थिक स्तर के बच्चों को अध्ययन में उचित रूप से स्थान नहीं मिल पाया। इसे वर्तमान अध्ययन की सबसे महत्वपूर्ण सीमा माना जा सकता है। माता-पिता और शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को वर्चुअल मीटिंग प्लेटफ़ॉर्मों के माध्यम से और टेलीफ़ोनिक साक्षात्कार के माध्यम से दर्ज किया गया था। सवाल मुख्य रूप से लॉकडाउन के दौरान उनके जीवन पर प्रभाव का पता लगाने के लिए थे। इस प्रकार प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया।

परिणाम और चर्चा

परिणाम और चर्चा को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर महामारी के प्रभाव एवं दूसरे भाग में शोधार्थी-शिक्षकों पर महामारी के प्रभाव का विश्लेषण दिया गया है।

तालिका 1— क्या आप लॉकडाउन में बेचैनी महसूस कर रहे हैं?

क्र. सं.	प्रतिक्रिया	दर
1.	हाँ	95.1 प्रतिशत
2.	नहीं	04.9 प्रतिशत

तालिका 1 से स्पष्ट है कि लगभग 95.1 प्रतिशत बच्चों ने बेचैनी के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की, इस बात की पुष्टि उनके माता-पिता ने भी की है।

विद्यालय के दर्शन के अभिलाषी बच्चे

इस लॉकडाउन और अव्यवस्थित जीवन शैली के बारे में बात करते हुए, बच्चों ने स्वीकार किया (लगभग 97 प्रतिशत बच्चे) कि वे स्कूल को बहुत याद करते हैं। अपने विद्यार्थियों के साथ बात करते समय शोधार्थी ने उन सभी घटनाओं एवं व्यवहारों पर ध्यान दिया जो उनकी स्कूल की यादों को उजागर कर सकती हैं। शोधार्थी ने स्वेच्छा से उनसे पूछा "आपको स्कूल की याद क्यों आती है? और आप वास्तव में इसके बारे में क्या याद करते हैं?, "प्रतिक्रियाएँ अजीब थीं। एक बच्चे ने कहा कि, "मैं बोर्ड पर लिखते समय चॉक व बोर्ड से आने वाली आवाज़ को याद करता हूँ"..."एक अन्य बच्चे ने कहा कि मैं दोपहर के भोजन के समय को याद करता हूँ", जब शोधार्थी एक साथ बैठते थे और उपलब्ध संपूर्ण खाद्य पदार्थों के साथ मज़े करते थे...मुझे "पेन फाइटिंग" और सभी शारीरिक शिक्षा के कलांशों की याद आती है। हालाँकि, मुझे ह…सर द्वारा हिंदी वर्ग कभी पसंद नहीं आया, लेकिन अब मैं इसे भी याद कर रहा हूँ... मुझे सुबह की सभा (हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखो में बस जाओ) बहुत पसंद थी। प्रतिक्रियाओं में जो एक बात आम थी (अलग-अलग शब्दों में), सभी ने कहा "मुझे अपना स्कूल वापस चाहिए।" अभिभावकों के साथ बैठक में यह भी बताया गया कि उनके बच्चे लगातार स्कूल को याद करते हैं। सरकार और अन्य शैक्षणिक प्रशासन स्कूलों के खुलने की उम्मीद नहीं बता

© NCERT not to be republished

रहे हैं और इससे विद्यार्थियों में उत्सुकता बढ़ रही है। यह स्थिति बच्चों में चिंता और बेचैनी के लिए ज़िम्मेदार है।

चिंतित बच्चे और तनाव के स्तर में वृद्धि

तालिका 2 से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी इस लॉकडाउन की अवधि के दौरान चिंता और तनाव का सामना कर रहे हैं। विद्यार्थियों से चिंता और तनाव के कारणों के बारे में बात करने पर पता लगा की वे बहुत-से पहलुओं को लेकर परेशान हैं — "मेरी बोर्ड परीक्षाएँ पास आ रही हैं। बोर्ड जीवन में महत्वपूर्ण होते हैं। हर कोई आपका बोर्ड स्कोर देखता है। इस साल यह महामारी क्यों आई? यह मेरे महत्वपूर्ण वर्ष को बर्बाद कर रहा है।" इसके अलावा, अन्य विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं को सुनना और समझना किसी चुनौती से कम नहीं मानते— "यह किसी संघर्ष से कम नहीं है।"

तालिका 2 — चिंता का स्तर

क्र. सं.	चिंता का स्तर	प्रतिक्रिया दर
1.	सामान्य	31.5%
2.	हलका	48.3%
3.	मध्यम	18.5%
4.	गंभीर	1.7%

एक लड़की ने कहा कि जब भी मैं टी.वी. का स्विच ऑन करती हूँ, तो यह हमेशा मरने वालों की संख्या को दर्शाता है। मुझे लगता है कि किसी दिन, मैं भी उस संख्या के बीच हो सकती हूँ। शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों द्वारा देखी जाने वाली सामग्री पर अतिरिक्त सतर्क रहना होगा। विद्यार्थियों को यह विश्वास दिलाएँ कि इस दुनिया में बहुत सारे अच्छे कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ हो रही हैं और हमें उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस महामारी में नई सीख यह है कि हमें दुनिया की अच्छी घटनाओं पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षक अगले स्तर के कोरोना योद्धा हैं, क्योंकि वे इस कॉविड-19 महामारी के दौरान और इसके बाद भी मनोवैज्ञानिक महामारी से लड़ने में बच्चों और अन्य लोगों की मदद करते रहेंगे।

पढ़ाई पर दुष्प्रभाव

विद्यार्थी, महामारी के परिणामस्वरूप होने वाली तालाबंदी के दुष्परिणामों और उसके शैक्षणिक प्रभावों के बारे में अधिक चिंतित हैं। विद्यार्थियों को लग रहा है कि यह उनकी गलती है। लगभग तीन चौथाई विद्यार्थियों ने कहा कि यह महामारी उनके सीखने को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करने वाली है। सरकारों और शिक्षण संस्थानों के विभिन्न प्रयासों के बावजूद शोधार्थी विद्यार्थियों को यह आश्वस्त करने में असफल हो रहे हैं कि यह उनकी गलती नहीं है। उन्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अधिकांश प्रसिद्ध बोर्डों (सी.बी.एस.ई. और आई.सी.एस.ई.) द्वारा पाठ्यक्रम में कमी को विद्यार्थियों द्वारा अलग-अलग रूप से देखा गया है। कुछ बच्चे कहते हैं कि यह समय की माँग है, जबकि अन्य बच्चे उनके सीखने पर इसके निहितार्थ के बारे में चिंतित हैं।

एक लड़की पाठ्यक्रम से अध्याय हटाने पर (फ़ोन पर) कहती है कि "लोकतांत्रिक अधिकार, गति के नियम और पाठ्यक्रम से धर्मनिरपेक्षता के बारे में कुछ विषय हटाना खतरनाक है, इसका बहुत ही लंबा प्रभाव पड़ेगा।" बच्चों की चिंता इस बात का प्रमाण है कि वे अपने भविष्य पर इसके प्रभाव के बारे में तर्कसंगत रूप से सोच रहे हैं। लड़की के सटीक शब्द थे कि, "हमें क्यों

© NCERT not to be republished

पीड़ित होना चाहिए? ये महत्वपूर्ण विषय हैं और आगे के शोध के लिए नींव हैं। मैं नुकसान में रह जाउँगी।"

तालिका 3— पढ़ाई पर लॉकडाउन का प्रभाव

क्र. सं.	प्रतिक्रिया	दर
1.	सकारात्मक	21.3%
2.	नकारात्मक	59.6%
3.	कोई प्रभाव नहीं	19.1%

अधिकांश विद्यार्थियों (59 प्रतिशत) को लगता है कि यह लॉकडाउन शैक्षणिक हिस्से पर नकारात्मक प्रभाव डालने वाला है। लगभग 21 प्रतिशत विद्यार्थियों को लगता है कि लॉकडाउन का पढ़ाई पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने वाला है और 19 प्रतिशत विद्यार्थियों को लगता है कि इसका कोई असर नहीं होगा।

शिक्षकों पर प्रभाव

माध्यमिक वर्गों के विद्यार्थियों पर महामारी के प्रभाव पर चर्चा की गई, अब दिल्ली के शिक्षकों पर कॉविड-19 महामारी के प्रभाव की चर्चा करेंगे।

क्या मेरे विद्यार्थी सीख भी रहे होंगे?

शिक्षकों के साथ हुई बातचीत ने हमारे शोध निष्कर्षों में नए आयाम जोड़े। यह पाया गया कि शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को लेकर भयभीत हैं। "मुझे डर है कि अगर मेरे विद्यार्थी ऑनलाइन नहीं सीख रहे होंगे तो क्या होगा?" एक शिक्षक ने कहा। शिक्षक प्रौद्योगिकी के उपयोग में विशेषज्ञ नहीं हैं, लेकिन वे इस ऑनलाइन संस्कृति के प्रति अनिच्छुक नहीं थे। जब शिक्षकों से पूछा गया की ऑनलाइन संस्कृति आपको कैसे लगती है या ऑनलाइन कक्षा लेने में आप कितनी सुविधा महसूस करते हैं, तो इसका परिणाम तालिका 4 में साझा किया गया है।

तालिका 4— ऑनलाइन कक्षा लेने में आप कितनी सुविधा महसूस करते है?

क्र. सं.	प्रतिक्रिया	दर प्रतिशत
1.	हमेशा	19.1%
2.	ज़्यादातर	38.2%
3.	कभी-कभी	38.2%
4.	कभी नहीं	4.5%

केवल 4.5 प्रतिशत शिक्षकों ने जवाब दिया कि उनके लिए ऑनलाइन कक्षाएँ लेना सुविधाजनक नहीं है। "मैं अभी समझ नहीं पाता हूँ कि मेरी स्क्रीन कैसे अदृश्य हो जाती है।...और मेरी ऑडियो हर समय कैसी रहती है।... बच्चों को शिकायत है कि मेरी आवाज़ हर समय अस्पष्ट रहती है और वे कक्षा में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। मैं अधिक कोशिश करता हूँ" बाकि लगभग शिक्षक 60 प्रतिशत ऑनलाइन कक्षा के साथ सहजता महसूस करते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण में समस्याओं के बारे में शिक्षकों के साथ चर्चा करते हुए पाया गया कि सबसे अनुभवी शिक्षक भी अब केवल उपकरण और प्रौद्योगिकी के बारे में ही सोच रहे हैं, कंटेन्ट पर ध्यान कम रहता है। एक विज्ञान शिक्षक ने कहा कि, "मुझे विभिन्न तकनीकी ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, जीमेल, व्हाट्सएप इत्यादि का उपयोग करने के अनुक्रम के बारे में योजना बनानी होती है और मैं आवश्यक अधिगम और शिक्षण सामग्री के बारे में चिंतित नहीं होता।" अधिगम और शिक्षण सामग्री जो वास्तव में समय की आवश्यकता है, शिक्षकों द्वारा उपयोग नहीं की जा रही है। सब कुछ यूट्यूब ट्यूटोरियल और वीडियो द्वारा पूरा करने की कोशिश की जा रही है।

© NCERT not to be republished

शासकीय स्कूल के एक गणित शिक्षक ने कहा कि, "मैं अपने विद्यार्थियों के लिए बहुत निराश हूँ, वे बेहतर के हकदार हैं उन्हें बेहतर ही मिलना चाहिए।" दिल्ली के स्कूल नियमित शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन कक्षा की पेशकश कर रहे हैं और जो विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षा में भाग लेने में असमर्थ हैं, उन्हें शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए कार्य-पत्र प्रदान किए जाते हैं। विद्यार्थियों को जिस तरह का समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए, वह उपलब्ध नहीं है। सरकारी स्कूल के विद्यार्थी (विशेष रूप से जो ऑनलाइन कक्षा में भाग लेने के सक्षम नहीं हैं) उनके समकक्षों के बराबर नहीं सीख पा रहे हैं। शोधार्थी उस परीक्षा के बारे में चिंतित हैं जिसे इन सभी विद्यार्थियों को वर्ष के अंत (बोर्ड परीक्षा) में पूरी करनी है।

अनिश्चितता की स्थिति

इस अप्रत्याशित दौर की स्थिति के बारे में शिक्षक अनजान हैं, सब कुछ इतना जल्दी और तेज़ी से बदल रहा है कि उन्हें पाठ्यक्रम में कमी, पाठ्यक्रम में बदलाव, आवश्यक अधिगम प्रतिफलों आदि के बारे में सीमित समझ है। शिक्षक समुदाय के बीच अनिश्चितता की स्थिति है। स्कूल यानी शिक्षकों की खुशी के लिए आवश्यक स्थान का बंद रहना शिक्षकों के बीच निराशा पैदा कर रहा है और जिन विद्यार्थियों तक पहुँच नहीं बन पा रही है, उनके बारे में सोचकर शिक्षकों के बीच तनाव भी पैदा हो रहा है। "हम स्कूल दोबारा खोलने के फैसले के बारे में अभी भी पर्दे में हैं, कोई भी स्कूल को फिर से खोलने के बारे में हमारी राय नहीं पूछ रहा है। हम महसूस कर रहे हैं कि हम शैक्षिक प्रणाली में सबसे कम महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं।"

शिक्षक अच्छा महसूस नहीं कर रहे हैं, क्योंकि उनका जुनून, जो स्थान उन्हें बहुत खुशी देता है (स्कूल), वह अभी बंद है। सरकारें विद्यार्थियों की खुशी बढ़ाने के लिए प्रयास कर रही हैं (जो की ज़रूरी भी है), लेकिन कोई भी शिक्षकों की भलाई और खुशी की तलाश में नहीं है। शिक्षक समुदाय की भलाई की ओर देखने की बहुत आवश्यकता है क्योंकि बिना शिक्षक की खुशी के हम बच्चों को खुश नहीं रख सकते।

निष्कर्ष

कोविड-19 सभी के लिए एक घातक बीमारी है, खासकर वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों के लिए। इस कोविड-19 महामारी ने लोगों के बीच असहनीय मनोवैज्ञानिक तनाव बढ़ाया है (जिओ, 2020; डुआन, 2020)। यह कोविड-19 महामारी मनोवैज्ञानिक संकट और मानसिक बीमारी को बढ़ावा दे रही है।

प्रतिक्रियाओं में एक बात आम थी कि, "सभी बच्चों को अपना स्कूल वापस चाहिए।" इसके अतिरिक्त, अधिकांश विद्यार्थी इस लॉकडाउन अवधि के दौरान चिंता और तनाव का सामना कर रहे हैं। विद्यार्थियों को लग रहा है कि यह उनकी गलती है। लगभग तीन चौथाई विद्यार्थियों ने कहा कि यह महामारी उनके सीखने को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करने वाली है। अधिकांश प्रसिद्ध बोर्डों (जैसे सी.बी.एस.ई. और आई.सी.एस.ई.) द्वारा पाठ्यक्रम में कमी को विद्यार्थियों द्वारा अलग-अलग रूप से देखा गया था। कुछ कहते हैं कि यह इस समय की माँग थी, जबकि अन्य बच्चे इनको सीखने के निहितार्थ के बारे में चिंतित थे।

© NCERT not to be republished

इसके अलावा, यह पाया गया कि शिक्षक विद्यार्थियों के सीखने के बारे में भयभीत हैं। शिक्षकों को डर है कि विद्यार्थी ऑनलाइन नहीं सीख रहे होंगे। शिक्षक प्रौद्योगिकी के उपयोग में विशेषज्ञ नहीं हैं, लेकिन वे इस ऑनलाइन संस्कृति के प्रति अनिच्छुक नहीं थे। किंतु जो विद्यालय शिक्षकों को एवं विद्यार्थियों को एक निश्चित तथा घर से बाहर मित्रों के संग पढ़ने और खेलने का पूर्ण अवसर प्रदान करते हैं, उनके बंद होने से शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों की गतिविधियाँ बाधित हुई हैं। अत: सरकारों को विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को खुशहाल बनाने के सार्थक कदम उठाने होंगे।

संदर्भ

ए. टूसेंट, पी. हुसिंग, ए. गमज़, के. वेंनिंगफेल्ड, एम. हर्ट्ज़र, ई. और श्रैम, बी. लोवे. 2020. सेंसटिविटी टू चेंज एंड मिनिमल क्लीनिकल इम्पोर्टेंस डिफ़रेंस ऑफ़ सेवन आइटम जनरलाइज्ड एंज़ायटी डिसऑर्डर क्वेश्चनईयर. *अफेक्ट रिसोर्ट*. 265. पृष्ठ संख्या 395–401.

गोयल के., पी. चौहान., के. छिकारा, पी. गुप्ता., और एम.पी. सिंह. 2020. फ़ियर ऑफ़ कोविड-19— फ़र्स्ट सुसाइडल केस इन इंडिया. *एशिया जर्नल ऑफ़ साइकाइट्री*. 2020;49:101989. doi: 10.1016/j.ajp.101989.

डी. जेंटिली, ए. बार्डिन, ई. रोस, सी. पिओवसन, एम. रामिग्नि, एम. डालमनज़ियो, एम. डेटोरी, ए. फ़िलिया और एस. सिक्वेट्टी. 2019, इंपैक्ट ऑफ़ कम्युनिकेशन मेजर इंप्लीमेंटेड ड्यूरिंग स्कूल ट्यूबरकुलोसिस आउटब्रेक ऑलरिस्क परसेप्शन अमंग पेरेंट्स एंड स्कूल स्टाफ़. इटली. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एन्वायरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ*. 17(3), पृष्ठ संख्या E911.

बलहारा वाई.पी., डी. कटुला, एस. सिंह, एस. चुक्कली और आर. भार्गव. 2020. इंपैक्ट ऑफ़ लॉकडाउन फ़ॉलोइंग कोविड-19 ऑन द गेमिंग बिहेवियर ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट्स. *इंडियन जर्नल ऑफ़ पब्लिक हेल्थ*. वॉल्यूम 64, इश्यू 6, पृष्ठ संख्या 172–176.

सी. जिओ. 2020. ए नोवल एप्रोच ऑफ़ कंसल्टेशन ऑन 2019 नोवल कोरोनावायरस (कोविड-19) रिलेटेड साइकोलॉजिकल एंड मेंटल प्रॉब्लम्स स्ट्रक्चर्ड लेटर थेरेपी. *साइकेट्रिक इंवेस्टिगेशन*. 17(2), पृष्ठ संख्या 175–176.

© NCERT not to be republished